Shiksha Samvad International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© SSIJMR|Volume-02| Issue-04| June- 2025
Available online at: https://shikshasamvad.com/

# उच्च स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

**कमल कुमार[1], डॉ. सुशील कुमार[2]**
[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, हिंदू कॉलेज, मुरादाबाद, यू.पी., भारत
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, हिंदू कॉलेज, मुरादाबाद, यू.पी., भारत

**सारांश :**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन रामपुर जनपद में किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा उद्देश्य रूप में उच्च स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में लिंग एवं क्षेत्र के आधार पर अध्ययन करने का निश्चय किया। शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श हेतु रामपुर जनपद के 120 स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है। शंधार्थी ने अध्ययन हेतु स्वनिर्मित नापनी का प्रयोग किया। निश्कर्ष रूप में उच्च स्तर में अध्ययनरत महिला एवं पुरुष विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जबकि उच्च स्तर में अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति ने सार्थक अन्तर पाया गया।

**मूल शब्द**: उच्च स्तर, छात्र, ऑनलाइन शिक्षा, सर्वेक्षण विधि, यादृच्छिक विधि, दृष्टिकोण, स्व-निर्मित पैमाना।

## प्रस्तावना

वर्तमान समय में हर क्षेत्र में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी सेवाओं का काफी विस्तार हुआ है। शिक्षा क्षेत्र भी इसका अपवाद नहीं है। प्राचीन गुरुकुल तथा आश्रम की वाचिक परमारा से होते हुए शिक्षा ने अनेक सोपान तय किये है। पिछली सदी के कामोवेश परम्पारिक, श्याम पट्ट तथा खड़िया, मिट्टी (चॉक) के दौर से गुजरते हुए इक्कीसवीं सदी के इस दूसरे दशक में पठन-पाठन का समूचा परिदृश्य बहुत बदल चुका है। आज की स्कूली शिक्षा नवयुगीन साधनों तथा युक्तियों से सुसज्जित होती जा रही है। साधारण ब्लैकबोर्ड की जगह स्मार्टबोर्ड ने ले ली है तथा विविध प्रकार के मार्कर पेन ने खडिया मिट्टी (चॉक) का स्थान ले लिया है। इनित करने के लिये इस्तेमाल होने कली स्टिक का स्थान लेजर पॉइंटर ने ले लिया है। स्लाइड प्रोजेक्टर तथा एल०सी०डी० प्रोजेक्टर अब हर कक्षा की अनिवार्य आवश्यकता बनते जा रहे हैं।

शिक्षा में दृश्यश्रव्य प्रणाली का प्रचलन उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। सुगम तथा बेहतर प्रस्तुतिकरण के लिये टच स्क्रीन वाले बोर्ड अब स्कूलों में इस्तेमाल किये जा रहे है। शिक्षण प्रणाली के तौर-तरीकों में बहुत तेजी से बदलाग हो रहा है। कोरोना महामारी के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए लागू किये गए लॉकडाउन के कारण स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय की शिक्षा प्रतिकूल रूप से प्रभावित हो रही है। परिणामस्वरूप शिक्षा अब तेजी से ई-शिक्षा की ओर अग्रसर हो रही है।

ऑन-लाइन शिक्षा से तात्पर्य अपने स्थान पर ही इण्टरनेट व अन्य संचार उपकरणों की सहायता से प्राप्त की जाने वाली शिक्षा से है। ऑन-लाइन शिक्षा के विभिन्न रूप है जिसमें वेब आधारित लर्निंग, मोबाइल आधारित लर्निंग, कम्प्यूटर आधारित लर्निंग और वर्चुअल क्लासरूम इत्यादि शामिल है। आज से जब कई वर्ष पहले ई-शिक्षा की अवधारणा आई थी तो दुनिया इसके प्रति उत्तनी सहज नहीं थी, परन्तु समय के साथ ही ई-शिक्षा ने राम्पूर्ण शैक्षिक व्यवस्था में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है।

वर्तमान युग में ऑन लाइन शिक्षा का प्रचलन तेजी से बढ़ता जा रहा है क्योंकि आज इण्टरनेट सर्च इन्जन पर शिक्षा सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारियाँ उपलब्ध है बाहे वह किसी भी क्षेत्र से सम्बन्धित ज्यों न हो। विद्यार्थी अपने शिक्षा सम्बन्धी समस्त प्रदत्त कार्य को पूर्ण करने हेतु ऑन लाइन सर्च इन्जन गूगल पर जाकर ही सम्बन्धित सामग्री सहजता से प्राप्त कर लेता है। गुणात्ता युक्त सन्दर्भित पुस्तकें एवं जर्नल भी ऑन लाइन अध्ययन हेतु विद्यार्थियों को सहज उपलब्ध हो जाते है। विषय सम्बन्धी रोचक सूचनाएँ विविध रूपों में सर्व सुलभ है। आज अधिकांश विद्यार्थी चाहे वह ग्रामीण क्षेत्रों से हो या शहरी क्षेत्रों से अध्ययन हेतु इण्टरनेट के सुलभ साधन मानते है क्योंकि यह परन्परागत पढ़ाई के साथ-साथ ज्ञान एवं जिज्ञासा पूर्ति हेतु रूचिकर दृश्य श्रव्य सामग्री के माध्यम से अध्ययन करना चाहते है, जो उन्हें विडियों के रूप में प्राप्त हो जाता है। यूट्यूब चैनल, ट्विटर, फेसबुक इसके लोकप्रिय माध्यम बन चुके है।

अभिवृत्ति किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना के प्रति एक खास ढंग से अनुक्रिया करने की एक मानसिक तत्परता होती है। अभिवृत्ति में व्यक्ति में अनुकूलता, प्रतिकूलता की बिना पर किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना के प्रति अनुक्रिया करने की तत्परता पाई जाती है। अभिवृत्तियाँ बहुत कुछ सीमा तक किये जाने वाले व्यवहार के लिए उत्तरदायी व्हराई जा सकती है। परन्तु इससे यह नहीं समझा जाना चाहिए कि व्यक्ति का व्यवहार सम्पूर्ण रूप में उसकी अभिवृत्तियों पर ही निर्भर करता है। व्यक्ति का व्यवहार हर एक स्थिति में उसके व्यक्तित्व की अपनी विशेषताओं और स्थिति, जिससे वह व्यवहार कर रहा होता है, दोनों का ही संयुक्त परिणाम होता है। इसलिए ऐसा होना असंगत नहीं कि व्यक्ति चाहे कितनी ही गहन अभिवृत्ति किसी विचार के प्रति रखें, परन्तु परिस्थितिवश वह बिल्कुल विपरीत व्यवहार कर सकता है। ऐसी दशा में अभिवृत्तियों के आधार पर व्यवहार की भविष्यवाणी तो नहीं की जा सकती है. थोडी-बहुत अटकले अवश्य लगाई जा सकती है, कि प्रतिकूल या अनुकूल अभिवृत्ति के कारण अमुक व्यक्ति की किसी वस्तु या विचार के प्रति कित्त प्रकार की प्रतिक्रिया होगी।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

**अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व**

भारतीय शिक्षा का इतिहास अति प्राचीन है। वैदिक काल से लेकर आज तक भारतीय शिक्षा निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर रही है। समय के साथ परिवर्तित हो रही सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा के स्वरूप में भी परिवर्तन एवं संशोधन किये जा रहे है।

तकनीकी का प्रयोग बढ़ने के साथ शिक्षा का स्वरूप भी बदला है। आज की बदलती परिस्थितियों एवं नवोन्मेष ने शिक्षा का स्वरूप भी अधिन्नूतन कर दिया है। यदि यह कहा जाए तो व्यर्थ नहीं होगा कि वर्तमान पीढ़ी की शिक्षा का अधिकाश हिस्सा देव बेस्ट तकनीकी पर निर्भर होता जा रहा है। ऐसे हालातों में शिक्षा की दशा और दिशा संभालने वाले शिक्षाविद्, अध्यापकों, विद्यार्थियों, शोधार्थियों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह उन कारकों का अध्ययन करें जो शिक्षा को सीधे-सीधे प्रभावित करते हैं। वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षा के समस्त घटक, विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक एवं समाज के हित धारकों के साथ नीति निर्माता भी ई-शिक्षा के प्रति सजग है और निरन्तर होते नवोन्मेषों का अपनाने हेतु तत्पर है।

ई-पोर्टल एवं विभिन्न शैक्षिक वेब साइट्स पर विविध सामग्री उपलब्ध है लेकिन आवश्यकता यह है कि विद्यार्थियों का मस्तिष्क प्रशिक्षित किया जाये, जिससे कि वह स्वतः उपयुक्त विषय सामग्री का चयन करने में समर्थ हो।

ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक समर्थित शिक्षण अधिगम के रूप में परिभाषित किया जाता है जो स्वाभाविक तौर पर क्रियात्मक होते हैं और जिनका उद्देश्य

शिक्षार्थी के व्यक्तिगत अनुभव, अभ्यास और ज्ञान के सन्दर्भ में ज्ञान के निर्माण को प्रभावित करना है। सूचना और संचार प्रणालियों, चाहे इनमें नेटवर्क की व्यवस्था हो या न हो, शिक्षा प्रक्रिया को कार्यान्वित करने वाले विशेष माध्यम के रूप में अपनी सेवा प्रदान करती है।

ऑनलाइन शिक्षा या डिजिटल शिक्षा अनिवार्य रूप से कौशल एवं ज्ञान का कम्प्यूटर एवं नेटवर्क समर्थित अंतरण है। ऑनलाइन शिक्षा इलेक्ट्रॉनिक अनुप्रयोगों और सीखने की प्रक्रियाओं के उपयोग को सन्दर्भित करता है। ऑनलाइन के अनुप्रयोगों और प्रक्रियाओं में देब आधारित शिक्षा, कम्प्यूटर आधारित शिक्षा, आभासी कक्षाएँ और डिजिटल सहयोग शामिल है। पाठ्य सामग्रियों का वितरण इण्टरनेट, इंट्रानेट/एक्स्ट्रानेट, ऑडियो या वीडियो टेप, उपग्रह टीवी और सीडी रॉम के माध्यम से किया जाता है। इसे स्वयं शिक्षार्थी द्वारा या अनुदेशक के नेतृत्व में किया जा सकता है और इसका माध्यम पाठ, छवि, एनीमेशन, स्ट्रीमिंग वीडियो और ऑडियो है।

**समस्या कथन**

**उच्च स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।**

**सक्रियात्मक परिभाषाएँ**

**उच्च स्तर:** उच्च स्तर या स्नातक स्तर की शिक्षा वह है जो स्कूल के बाद महाविद्यालय व विश्वविद्यालय में प्राप्त की जाती है। उच्च स्तर की शिक्षा किसी विशेष वर्ग जैसे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य में प्रदान की जाती है।

**विद्यार्थी:** विद्यार्थी से तात्पर्य उस बालक-बालिका या महिला-पुरुष विद्यार्थियों से है जो महाविद्यालय अधवा विश्वविद्यालय में शिक्षकों के सानिध्य में किसी विशेष विषय सम्बन्धित शिक्षा ग्रहण करते है।

**ऑनलाइन शिक्षा:** ऑन लाइन शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा से है जो कम्प्यूटर में इण्टरनेट के द्वारा प्रदान की जाती है।

**अभिवृत्ति:** अभिवृत्ति मानव के दैनिक जीवन में व्यक्ति के उस दृष्टिकोण की ओर संकेत करती है, जिसके कारण वह किसी वस्तु परिस्थिति, संस्था, व्यवस्था या व्यक्ति के प्रति किसी विशिष्ट प्रकार का व्यवहार व्यक्त करता है।अभिवृत्ति एक सामाजिक प्रत्यय एवं मानसिक पहलू है। इसका सम्बन्ध सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार के मानसिक पक्ष से होता है।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

**अध्ययन के उद्देश्य**

1. उच्च स्तर में अध्ययनरत महिला एवं पुरुष विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. उच्च स्तर में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

**अध्ययन की परिकल्पनायें**

1. उच्च स्तर में अध्ययनरत महिला एवं पुरुष विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्च स्तर में अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**अध्ययन का सीमांकन**

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल रामपुर जनपद तक सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत उच्च स्तर के महाविद्यालय के केवल 120 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

**सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण**

**पेट्रे व गन (2022)** ने जनपद रांची के माध्यमिक स्तर की महिला विद्यार्थियों की इन्टरनेट के प्रति जागरूकता एवं उपयोग का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के अन्तर्गत 445 महिला विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि द्वारा न्यादर्श के रूप में चुना गया। सर्वेक्षण करने के उपरांत पाया कि महिला विद्यार्थी इन्टरनेट में अत्याधिक सलिप्त है एवं इण्टनेट के दुष्प्रभावों का भी असर महिला विद्यार्थियों पर साफ-साफ देखा जा सकता है।

**प्रेविक (2022)** ने पाया कि अधिकांश किशोर अपनी सामाजिक बाछनाओं के कारण घर या विद्यालय की अपेक्षा साइबर कैफे में जाकर इन्टरनेट का प्रयोग अधिक करते हैं।

**बाब कुट्टे और सलीह (2022)** ने द्वारा कालीकट विश्वविद्यालय में किये गये अध्ययन में यह पाया गया कि छात्र शोध छात्र व अध्यापक सभी इन्टरनेट का प्रयोग शोध, अध्ययन व शिक्षण के उद्देश्य से करते है।

**अध्ययन की विधि**

प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

**जनसंख्या**

प्रस्तुत अध्ययन में रामपुर जनपद की समस्त स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

**न्यादर्श**

प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्ता द्वारा समपुर जनपद की 120 स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया।

**अध्ययन का उपकरण**

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया।

**सांख्यिकीय प्रविधियाँ**

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में शोधार्थी द्वारा परीक्षण करने के लिए ऑकड़ों का संग्रह किया गया तथा तत्पश्चात् इसका मध्यमान, मानक विचलन, टी-अनुपात द्वारा मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जाँच की गयी।

**आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या तालिका 1**

| समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी मान |
|---|---|---|---|---|
| महिलाविद्यार्थी | **65** | **82.18** | **15.24** | **1.49** |
| पुरूष विद्यार्थी | **55** | **70.40** | **14.75** | |

शोध परिकल्पना पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि उच्च स्तर में अध्ययनरत महिला विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 82.18 तथा मानक विचलन 15.24 और उच्च स्तर में अध्ययनरत् पुरूष विद्यार्थियो की ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 70.40 तथा मानक विचलन 14.76 है। महिला विद्यार्थियों का मध्यनान एवं मानक विचलन पुरुष विद्यार्थियों के मध्यमान एवं मानक विचलन से अधिक है। टी-मान का प्रयोग करने से प्राप्त टी-मान 1.49 प्राप्त हुजा, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 के मान 1.98 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है अर्थात्त 0.06 सार्थकत्ता स्तर पर परिकल्पना उच्व स्तर में अध्ययनरत् महिला एवं पुरूष विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

**तालिका 2**

| **समूह** | **संख्या** | **मध्यमान** | **मानक विचलन** | **टी मान** |
|---|---|---|---|---|
| **ग्रामीण विद्यार्थी** | **61** | 85.43 | 17.59 | 2.89* |
| शहरी विद्यार्थी | **59** | 74.59 | 14.53 | |

शोध परिकल्पना 2 पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि उच्च स्तर में अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 82.43 तथा मानक विचलन 17.59 और उच्च स्तर में अध्ययनरतशहरी विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 74.59 तथा मानक विचलन 14.53 है। ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान एवं मानक विचलन शहरी विद्यार्थियों के मध्यमान एवं मानक विचलन से अधिक है। टी-मान का प्रयोग करने से प्राप्त टी-मान 2.89 प्राप्त हुआा, जो कि सार्थकता स्तर 0.06 के नान 1.98 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है अर्थात 0.05 सार्थकता स्तर पर परिकल्पना स्नातक स्तर पर अध्ययनरत उच्च्ब स्तर में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया है।

**शैक्षिक निहितार्थ**

1. प्राथमिक शिक्षकों की नियुक्ति के समय अध्यापन अभिक्षमता को ध्यान रखा जाए तो प्राथमिक शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाया जा सकता है।

2. महिला प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन अभिक्षमता को दृष्टिगत रखते हुद शिक्षण व्यवसाय में महिलाओं को अधिक अवसर देने से जहाँ बच्चों का सर्वांगीण विकास होगा वहीं उन्हें घर जैसा वातावरण विद्यालय में मिलेगा जिससे बच्चों में पढ़ने की रूचि बढ़ेगी।

3. इस अध्ययन का शैक्षिक नहत्य है कि प्रशिक्षणार्थी अपनी अध्यापन अभिक्षमता का समुचित विकास कर सके। प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन अभिक्षमता के जिन क्षेत्रों में कमी है उसका विकास करके उनकी अध्यापन अभिक्षमता को बढ़ाया जा सकता है।

**सुझाव**

1. प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में अध्ययन क्षेत्र में रामपुर जनपद के उच्च स्तर के महाविद्यालयों को ही लिया गया है। भविष्य में अध्ययन की ओर विस्तृत रूप देकर सभी राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर भी सम्पादित किया जा सकता है।

2. प्रस्तुत लघु शोध में मात्र 150 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयन कर अध्ययन किया गया है। भविष्य में इसे और बड़े स्वादर्श पर सम्पादित कर प्रभावी व उचित परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं।

3. प्रस्तुत लघु शोध एवं विश्वसनीय प्रवन्ध में अध्ययन केवल उच्च स्तर के महाविद्यालयों के विद्यार्थियों पर किया गया है। भविष्य में इसे शिक्षकों एवं प्रधानाचार्य पर सम्पादित किया जा सकता है।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. राने ए०चजे० (1983): विशिष्ट बालकों की समेकित शिक्षा पर आधारित महाराष्ट्र में संचालित योजना का मूल्यांकन, मुम्बई विश्वविद्यालय।

2. पाठक ए०बी० (1984): सामान्य विद्यालयों में विशिष्ट बालकों का अध्ययन, पीएच०डी० शिक्षा, महावीर स्थानी विश्वविद्यालय, उदयपुर।

3. लता (1985) सामान्य तथा विशिष्ट बालकों के सामाजिक, भावात्मक तथा शैक्षिक समायोजन के प्रति माता पित्ता की अभिवृत्ति का अध्ययन, विशिष्ट शिक्षा में शोध।

4. रामगोपाल एवं राय (1994): मानसिक मंद बालकों के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन, नई दिल्ली।

5. पाण्डेय एस०पी० (1995) पूर्वी उत्तर प्रदेश से ग्रामीण क्षेत्रों में अध्ययनरत् विशिष्ट बालकों की शिक्षा, पण्डित गोविन्द बल्लन पाण्डेय इन्स्टीट्यूट, लखनऊ।

6. ल्यूडवर्ग, एस0 (1996) एक प्रभावी अनुदेशन व्यूह रचना के रूप में पूर्ण समावेशीकरण के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन, लघु कोच प्रबन्ध, एवस्ट्रैक्ट, अन्तर्राष्ट्रीय।

7. पुनानी (1997): विशिष्ट बालकों हेतु संबालित समन्धित शिक्षा के प्रारूप का मूल्याकन, वोल. आईआई(2), 86-1021

8. बॉगरा, जीठ (1997) समावेशीत समाज के लिए समावेशीत शिक्षा, ब्रिटिश जर्नल, विशिष्ट।

9. लिप्सकी (1999) समावेशीत शिक्षा लोकतान्त्रिक समाज में आवश्यकता शिक्षा प्रणाली में समावेशीकरण, लन्दन, कैगन पेटा लिमिटेड।

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

## ***Cite this Article:***

**कमल कुमार[1], डॉ. सुशील कुमार[2], "उच्च स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन"**, *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 2, Issue 4, pp.01-07, June 2025. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

# CERTIFICATE

## of Publication

***This Certificate is proudly presented to***

**कमल कुमार और डॉ. सुशील कुमार**

**For publication of research paper title**

**"उच्च स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन"**

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-04, Month June 2025, Impact-Factor, RPRI-3.87.

**Dr. Neeraj Yadav**
**Editor-In-Chief**

**Dr. Lohans Kumar Kalyani**
**Executive-chief- Editor**

**Note:** This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/